परमात्म ऊर्जा

मास्टर बीजरूप की स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास करते-करते सहज इस स्मृति में अपने आपको स्थित कर सकते हो? जैसे विस्तार और वाणी में सहज ही आ जाते हो, वैसे ही वाणी से परे विस्तार के बजाय सार में स्थित हो सकते हो? हद के जादूगर विस्तार को समाने की शक्ति दिखाते हैं। तो आप बेहद के जादूगर विस्तार को नहीं समा सकते हो? कोई भी आत्मा सामने आवे, साप्ताहिक कोर्स एक सेकण्ड में किसको दे सकते हो? अर्थात् साप्ताहिक कोर्स से जो भी आत्माओं में आत्मिक शक्ति व सम्बन्ध की शक्ति भरने चाहते हो वह एक सेकण्ड में कोई भी आत्मा में भर सकते हो व यह अन्तिम स्टेज है? जैसे कोई भी व्यक्ति दर्पण के सामने खड़े होने से ही एक सेकण्ड में स्वयं का साक्षात्कार कर लेते हैं, वैसे आपके आत्मिक स्थिति, शक्ति रूपी दर्पण के आगे कोई भी आत्मा आवे तो क्या एक सेकण्ड में स्व स्वरूप का दर्शन व साक्षात्कार नहीं कर सकते हैं?

वह स्टेज बाप समान लाइट हाउस और माइट हाउस बनने के समीप अनुभव करते हो व अभी यह स्टेज बहुत दूर है? जबकि सम्भव समझते हो तो फिर अब तक ना होने का कारण क्या है? जो सम्भव है, लेकिन प्रैक्टिकल में अब नहीं है तो ज़रूर कोई कारण होगा। ढीलापन भी क्यों है? ऐसी स्थिति बनाने के लिए मुख्य कौन से अटेन्शन की कमी है? जब साइंस ने भी अनेक कार्य एक सेकण्ड में सिद्ध कर दिखाये हैं, सिर्फ स्विच ऑन और ऑफ करने की देरी होती है। तो यहाँ वह स्थिति क्यों नहीं बन पाती? मुख्य कौन-सा कारण है? दर्पण तो हो। दर्पण के सामने साक्षात्कार होने में कितना टाइम लगता है? अभी आप स्वयं ही विस्तार में ज़्यादा जाते हो। जो स्वयं ही विस्तार में जाने वाले हैं वह और कोई को सार रूप में कैसे स्थित कर सकते? कोई भी बात देखते या सुनते हो तो बुद्धि को बहुत समय की आदत होने कारण विस्तार में जाने की कोशिश करते हो। जो भी देखा व सुना उसके सार को जानकर और सेकण्ड में समा देने का व परिवर्तन करने का अभ्यास कम है। "क्यों, क्या" के विस्तार में ना चाहते भी चले जाते हो। इसलिए जैसे बीज में शक्ति अधिक होती है, वृक्ष में कम होती है, वृक्ष अर्थात् विस्तार। कोई भी चीज़ का विस्तार होगा तो शक्ति का भी विस्तार हो जाता। कोई भी बात के विस्तार में जाने से समय और संकल्प की शक्ति दोनों ही व्यर्थ चली जाती हैं। व्यर्थ जाने के कारण वह शक्ति नहीं रहती। इसलिए ऐसी श्रेष्ठ स्थिति बनाने के लिए सदा यह अभ्यास करो।

कथा सरिता

एक सफल व्यक्ति

एक बार मुम्बई के हलचल भरे शहर में, राज नाम का एक लड़का रहता था। राज एक विनम्र परिवार से तालुक रखते थे। जो गुज़ारा करने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ता था। अपनी वित्तिय चुनौतियों के बावजूद राज के बड़े सपने थे और सफलता की, एक न बुझने वाली प्यास थी।

एक दिन, सड़कों पर घूमते हुए राज को एक छोटी-सी किताबों की दुकान मिली। जैसे ही उन्होंने प्रवेश किया पुरानी किताबों की सुगंध उनके होश में भर गई और उन्होंने साहित्य की दुनिया के साथ एक अकथनीय जुड़ाव महसूस किया। राज ने स्टोर के मालिक से संपर्क किया और पूछा कि क्या वह किताबों को पढ़ने के अवसर के बदले में वहाँ पार्ट टाइम काम कर सकते हैं।

युवा लड़के के उत्साह से प्रभावित होकर, उस दुकान के मालिक राज को नौकरी पर रखने के लिए तैयार हो गए। स्कूल के बाद हर दिन, राज किताबों की दुकान पर भागता, उत्सुकता से ज्ञान को अवशोषित करता और महान लेखकों की करामाती कहानियों में खुद को खो देता।

हर बीतते दिन के साथ किताबों के लिए उनका प्यार और गहरा होता गया, उनके भीतर महत्वाकांक्षा की एक चिंगारी भड़क उठी। एक शाम, जब राज एक सफल उद्यमी के जीवन के बारे में एक किताब में पढ़ा तो हमेशा के लिए उनके दृष्टिकोण को बदल दिया।

इन शब्दों से प्रेरित होकर, राज ने महसूस किया कि अगर वह अपने सपनों को हासिल करना चाहता है तो उसे अपनी शंकाओं और सीमाओं को दूर करना होगा। नए दृढ़ संकल्प के साथ, उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त करने का फैसला किया, यह जानते हुए भी कि इससे उनके परिवार पर आर्थिक बोझ पड़ेगा।

राज ने अथक परिश्रम किया, देर रात तक पढ़ाई करता था और उनका समर्पण तब रंग लाया जब उन्होंने देश के बहुत बड़े विश्व विद्यालयों में छात्रवृत्ति प्राप्त की। जैसे ही उन्हें यह खबर मिली, वह इसे अपने परिवार के साथ साझा करने के लिए दौड़ पड़े।

उनके चेहरे से खुशी के आंसू छलक पड़े, तब उन्हें लगा कि उनका बलिदान व्यर्थ नहीं गया है। विश्वविद्यालय में अपने समय के दौरान, राज को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा और संदेह के क्षणों का सामना करना पड़ा। हालाँकि, वह उस उद्धरण को कभी नहीं भूले जो उनका मंत्र बन गया था। वह रातों की नींद हराम, कोर्स वर्क की मांग और नौकरी के साक्षात्कार से अनगिनत अस्वीकृति के माध्यम से दृढ़ रहे। राज जानता था कि असफलताएं सफलता की सीढ़ियां बन रही थीं।

अंत में कई परीक्षणों और क्लेशों के बाद, राज का अटूट दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत रंग लाई। उन्हें मुंबई की एक प्रतिष्ठित कंपनी में नौकरी मिली, जहाँ उनकी प्रतिभा और समर्पण को पहचाना गया। इन वर्षों में, वह कॉर्पोरेट सीढ़ी पर चढ़े और उनकी विनम्र शुरुआत ने उनकी यात्रा की निरंतर याद दिलाई।

राज उस छोटी-सी किताबों की दुकान को कभी नहीं भूले जिसने उनकी ज़िंदगी बदल दी थी। वह उस दुकान पर लौटे और इसे खरीद लिया, जिससे यह इच्छुक पाठकों और लेखकों के लिए एक जीवंत केन्द्र बन गया। उन्होंने साक्षरता और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए खुद को समर्पित कर दिया, वंचित बच्चों को किताबों के जादू की खोज करने के अवसर प्रदान किए जैसा कि उनके पास था।

आज राज की कहानी पूरे भारत में अनगिनत व्यक्तियों के लिए एक प्रेरणा है। वह एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है कि दृढ़ता, दृढ़ संकल्प और स्वयं में विश्वास के साथ, यहाँ तक कि सबसे चुनौतिपूर्ण परिस्थितियों को भी दूर किया जा सकता है।

टोंक-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग भवन सेवाकेंद्र में आयोजित छः दिवसीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर 'किड्स समर कैम्प' में सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. अपर्णा दीदी, ब्र.कु. ऋतु बहन, ब्र.कु. गुंजन बहन व ब्र.कु. सूरज भाई ने विभिन्न विषयों पर बच्चों का मार्गदर्शन किया तथा उन्हें विभिन्न एक्टिविटीज़ कराई।

जयपुर-बनीपार्क(राज.)। चांदपोल स्थित जालना अस्पताल में नर्सेज़ डे के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. दीप्ति बहन, ब्र.कु. उमा बहन, ब्र.कु. कुणाल, अस्पताल की अधीक्षक डॉ. कुसुम लता मीणा तथा सभी नर्सिंग स्टाफ मौजूद रहे। इस मौके पर सभी नर्सिंग स्टाफ के कार्यों की सराहना करते हुए उन्हें सम्मानित किया गया।

स्यालबा-रादौर(फतेहाबाद)। एकादशी के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं सरपंच पूजा रानी, ब्र.कु. राज बहन व ब्र.कु. राजू भाई।

मोतिहारी-बिहार। मातृ दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र में आयोजित समारोह में पिंकी बहन को सम्मानित करते हुए ब्र.कु. विभा बहन। इस मौके पर वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. मीणा बहन, ब्र.कु. पूनम बहन सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे। कार्यक्रम में 24 माताओं को सम्मानित किया गया।

तोशाम-हरियाणा। पृथ्वी दिवस पर मॉडल स्कूल,तोशाम के विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सुनीता बहन।